करता है।

1.3 इतिहास की विभिन्न अवधारणाएं (Different Concepts of History)

इतिहास आज अपने जिस स्वरूप में स्थित है, उसे प्राप्त करने के लिये एक लंबी विचार-श्रृंखला विकास की विभिन्न कड़ियों से निर्मित है। इतिहास का विकास किस प्रकार हुआ और किस प्रकार मानव ने अपनी वर्तमान स्थिति और उसके प्राचीनतम रूप के बीच समन्वय स्थापित किया होगा-यही इतिहास के स्वरूप को स्पष्ट करता है। इतिहास के स्वरूप से संबंधित विरोधात्मक मतों से एक महत्वपूर्ण तथ्य यह दिखाई देता है कि सभी विचारक इतिहास के स्पष्टत: एक ही अर्थ नहीं लेते है। मानव जाति की निरन्तर परिवर्तित होती हुयी स्थिति के अनुसार इतिहास की धारणाओं में भी परिवर्तन होता रहा है।

1.3.1 इतिहास के संबंध में पुरानी अवधारणा (Old concept related to History) -11वीं शताब्दी से पहले इतिहास केवल साहित्य एवं वीरगाथाओं से संबंधित था। यह गद्य अथवा पद्य में एक कथा के रूप में था। एक अच्छी कथा बनाने के लिये वैज्ञानिक अथवा यथार्थ होना नहीं वरन् रोचक व मनोरंजक होना आवश्यक था। लेखन कला का आविष्कार नहीं होने से इतिहास को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक परम्परा के रूप में पहुंचाया जाता था, जिसमें सत्य का अंश अवश्य होता था किन्तु वह अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक होता था। परिणामत: इतिहास के विषय में विभिन्न प्रकार की अवधारणाएं प्रचलित हो गयी। कुछ लोग इतिहास को कपोल कल्पित कहानियों तथा असत्य तथ्यों का संकलन मात्र समझने लगे। अपने वैज्ञानिक स्वरूप को प्राप्त करने के पहले इतिहास उपन्यास माना जाता था। नेपोलियन इतिहास को सर्वसम्मत काल्पनिक कहानियाँ कहा करता था। हरबार्ट स्पेन्सर इतिहास को पथ प्रदर्शन के लिये महत्वहीन एवं अनुपयुक्त मानता था। इतिहास के संबंध में इस प्रकार की विचारधाराएं 11वीं शताब्दी से पूर्व विश्व में विद्यमान थी। धीरे-धीरे लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और वैज्ञानिक प्रगति का प्रार्दुभाव हुआ जिसने शिक्षा जगत में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। परिणामस्वरूप अब इतिहास को मानव जीवन के क्रमिक विकास की अविरल कहानी माना जाने लगा। भौतिक

विज्ञानों की उन्नति ने अन्वेषण की वैज्ञानिक प्रणालियों द्वारा 11वीं शताब्दी में इतिहास के अध्ययन को नवीन आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया।

1.3.2 इतिहास की आधुनिक अवधारणा (Modern concept of History) - इतिहास के स्वरूप निर्धारण का श्रेय जिस प्रकार यूनानी लेखकों को है, ठीक उसी प्रकार इतिहास को कहानी एवं शिक्षात्मक विधि के प्रस्तुतीकरण से निकालकर उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का श्रेय जर्मन लेखकों को है। 11वीं शताब्दी में इतिहास के आयामों का ही विस्तार नहीं हुआ वरन् उसके संबंध में अवधारणा को भी स्पष्ट किया गया तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा। यदपि इस समय भी इतिहास की प्रकृति को लेकर विद्वानों में विवाद बना हुआ था। कुछ विद्वानों ने इतिहास से कारण तथा कार्यकारण भाव को अलग-अलग निकालने पर बल दिया तो कुछ ने इनके कारण इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा। वर्तमान में कोई भी इतिहास को दैवी शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित नहीं मानता है। अब यह स्पष्ट अवधारणा बन गयी है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है जिनका प्रयोग भौतिक एवं सामाजिक वैज्ञानिक करते है। आज का इतिहासकार वैज्ञानिक विधि द्वारा मानव समाज की विवेचना कर किन्हीं ठोस एवं सर्वमान्य निष्कर्ष पर पहुंचता है। वह इतिहास से संबंधित तथ्यों का संकलन, सत्यापन एवं वर्गीकरण करता है। तथ्यों का विश्लेषण करता है और तत्पश्चात सामान्य सिद्धान्त का निर्धारण करता है।

करता है।

1.3.3 इतिहास का महत्व (Importance of History) - इतिहास अतीत काल में घटित घटनाओं का वर्णन मात्र नहीं है न ही यह केवल किस्से-कहानियों तक सीमित है। यह जीवन की एक कला है जो हमारे जीवन को उन्नत तथा समृद्ध बनाती है। इतिहास हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। यह हमें हमारी भूलो तथा असफलताओं का ज्ञान कराकर जीवन को उन्नत बनाने में हमारी सहायता करता है। इतिहास हमें नये-नये अनुभव प्रदान करता है तथा उन अनुभवों के आधार पर हम जीवन में नवीनता लाकर नये उत्साह से जीवन के नवीन मार्ग पर अग्रसित होते है। इतिहास हमें हमारी अमूल्य धरोहरों का न केवल ज्ञान ही कराता है अपितु उनका प्रत्यक्ष प्रमाण भी देता है इस प्रकार हम पाते है कि इतिहास पढ़ने से हमें अनेक लाभ है जो कि निम्नांकित है -

1. **धरोहरों का ज्ञान -** इतिहास हमें हमारी विभिन्न धरोहरों का ज्ञान करने का सशक्त माध्यम है। इनमें हम अपने पूर्वजों के संबंध में विभिन्न प्रकार की जानकारियां प्राप्त कर सकते है।
2. **सांस्कृतिक उद्भव स्त्रोत** - हमारे पूर्वजों तथा महापुरुषों ने जो आदर्श हमारे लिये स्थापित किये है ये ही समग्र रूप से संस्कृति कहलाती है। इतिहास पूर्वजों के आदर्शों का ज्ञान कराकर समाज की संस्कृति का आधार स्त्रोत बनता है।
3. **ज्ञानवर्द्धन -** इतिहास के अध्ययन में हमने अपने पूर्वजों के द्वारा जो असफलता एवं सफलता प्राप्त की उनसे अनुभव प्राप्त असफलताओं को अपनाते है तथा उनकी असफलताओं का विश्लेषण कर उनसे बचा जा सकता है।

4. **एकता की भावनाओं का इतिहास** - इतिहास एक प्रजाति, जाति तथा राष्ट्र के नियमों को एकता के सूत्र में बांधने में भी हमारी सहायता करता है। अपने महान इतिहास के कारण ही एक प्रजाति, एक समाज तथा एक राष्ट्र के व्यक्ति एकता के बंधन में बंधे रहते है।
5. **जिज्ञासा की संतुष्टि -** हम अपने विकास को प्रमाणित करने वाले विभिन्न कारणों की जानकारी चाहते है। इतिहास में विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर हमारी जिज्ञासा शांत होती है।
6. **विकास-क्रम का ज्ञान** - इतिहास मानव उसकी कृतियों, सभ्यताओं आदि के विकास क्रम का ज्ञान देकर उसके भविष्य की संभावनाओं का अनुभव लगाकर हमें सफल बनाती है।